प्रातः क्लास 17-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः बागवान बाप बैठअपने फूलों को समझाते हैं। देखते हैं, सैर करते हैं। क्योंकि और सभी जगह तो फूल और माली होते हैं। यहां तो तुम बागवान पास आते हो अपने खुशबूएं देने। तुम फूल हो ना। तुम भी जानते हो बाप भी जानते हैं। कांटों के जंगल के बीज रूप है रावण। यूं तो सारे झाड़ का बीज एक ही है। परन्तु फूलों के बगीचे सेफिर कांटों का जंगल बन जाता है तो जंगल बनाने वाला भी जरूर होगा ना। वह है रावण। तुम जज करो बाप ठीक समझाते हैं। देवताओं रूपी फूलों के बगीचे का बीज रूप है बाप। तुम अभी देवी-देवताएं फूल बन रहे हो। यह तो हरेक जानते हैं हम किस किसम का फूल हैं। बागवान भी यहां आते हैं फूलों को देखने। वह तो सभी हैं माली। उसमें भी अनेक प्रकार के माली हैं। उस बगीचे के भी भिन्न2 प्रकार के माली होते हैं। कोई की 60 रुपया वेतन, कोई की 100 रुपया, कोई का 200 रुपया भी होते हैं। जैसे मोगल गार्डेन का माली जरूर बहुत होशियार होगा। 250-300 पगार होगा। यह तो बहुत बड़ा बेहद का बगीचा है। इसमें भी अनेक प्रकार के नम्बरवार माली हैं। जो बहुत अच्छे माली होते हैं वह बगीचे को अच्छा शोभनिक बना देते हैं। अच्छे में अच्छे फूल ~~गम~~ लगाते हैं। गवर्मेन्ट हाउस, मोगल गार्डेन कितना अच्छा है। यह है बेहद का बगीचा। एक है बागवान। उस कांटों के जंगल का भी एक बीज है रावण। और फूलों के बगीचे का भी एक बीज है शिव बाबा। वरसा मिलता है बाप से। रावण से वरसा नहीं मिलता। वह तो जैसे सराप देते हैं। सरापत होते हैं। तो फिर जो सुख देने वाला है उनको सभी याद करते हैं। क्योंकि वह है सुखदाता। वह है सुख देने वाला। तो बागवान आते हैं, तो जरूर माली सहित आवेंगे। माली भी भिन्न2 प्रकार के हैं। बागवान आकर मालियों को भी देखते हैं। कैसे छोटा2 बगीचा बना हुआ है, कौन2 सी फूलहै, वह भी ख्याल में लाते हैं। कब~ बहुत अच्छे2 माली भी आते हैं। उन्हों की फूलों की सजावट भी अवसर कर के अच्छे2 आ जाते हैं तो बागवान कोजास्ती खुशी रहती है। ओ ओ यह माली तो बड़ा अच्छा है फूल भी अच्छे2 लाये हैं। यह है बेहद की बात। वह है कांटों का जंगल। जिसका बीज है रावण। तुम बच्चों के दिल में है बाबा बिल्कुल सच्च कहते हैं। ~~क्रक्रक्र~~ आधा कल्प चलता है रावण राज्य। फूलों के बगीचे को कांटों का जंगल ~~बना~~ बना देती है। रावण। जंगल में कांटे ही कांटे होते हैं। बहुत दुःख उठाते हैं। बगीचे के बीचकांटा थोड़ेही होता है। एक भी नहीं। बच्चे जानते हैं रावण ~~अ~~ देहअभिमान में लाती है। बड़े ते बड़े कांटा है देह अभिमान का। बाबाने रात्रि को भी समझाया किन्हों की ~~की~~ दृष्टि कामी रहती है। ना ऐसी कामी दृष्टि है। वेश्यायें लम्पट भी हैं ना। यह हैं सब से बड़े कांटे। इसमें भी कोई खास कांटे रखते हैं। जिनको कामी कुत्ता भी कहा जाता है। बड़ा2 घर खास उन्हों के लिए बनाते हैं। जैसे कलकत्ता है। वहां दूसरे वेश्या न रखे तो उनको बड़ाआदमी नहीं माना जाये। बहुत गन्द है। इसलिए भारत का नाम ही रखा हुआ है वेश्यालय। खास भी हैं आम भी हैं। कामन और अनकामन होते हैं ना। खास अपने लिए रखते हैं, फिर खुद भी जाते हैं, दोस्तों को भी ले जाते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं यह है वेश्यालय जो विकार में जाते हैं या चेष्टा करते हैं, यह फलाना बहुत अच्छा है। इन से विकार में जायें। वेश्याओं का यह काम होता है। कब कब यहां भी ऐसे आते हैं। बुधि देह तरफ जाती है। कोई की ऐसी बुधि जाती है,। कोई नये2 भी आते हैं बड़ा अच्छा पलहे चलते ~~थे~~ है, समझते हैं विकार में कभी नहीं जावेंगे, पवित्र रहेंगे। उससमय मसानी वैराग्य आता है। फिर वहां जंगल में जाते हैं तो खराब हो पड़ते हैं। दृष्टि गंदी हो जाती है। यहां जिनको अच्छा2 फूल समझ बाबवान पास ले आते हैं बाबा यह बहुत अच्छा फूल है। कोई के लिए कान में बताते हैं यह फलाना फूल है। यह ऐसा है। माला तो जरूर बतावेंगे ना। ऐसे नहीं कि बाबा अन्तर्यामी हैनहीं। माली हरेक के चाल-चलन बताते हैं। बाबा इनकी दृष्टि अच्छी नहीं है। इनकी चलन रायल नहीं है। यह 10% सुधरे हैं। इनकी 20% सुधरी है। मूल है आंख जो बहुत धोखा देती है। ~~बागमी-आकर~~ माली आकर बागवान को सभी को कुछ बतावेंगे ना। बाबा एक एक से पूछते हैं बताओ तुम ने कैसे2 फूल लाये हैं। कोई गुलाब के फूल होते हैं कोई मोतिये की। कोई अक भी ~~एक=एक~~

ले आते हैं। यहां बहुत खबरदार रहते हैं। जंगल में जाते हैं तो फिर फूल मुरझाये जाते हैं। देखते हैं यह इस प्रकार का फूल हैं। माया भी ऐसी है जो मालियों को भी बड़ा जोर से थप्पर लगा देती है जो मालीभीकांटे बन पड़ते हैं। बागवान आते हैं तो पहले2 बगीचे को देखते हैं। फिर बैठ उनको श्रृंगारते हैं। बच्चे खबरदार रहो। खामियां निकालते जाओ। नहीं तो फिर बहुत पछतावेंगे। बाबा आया है यह बनाने। इनके बदली हम घाटे बने। अपनी जांच की जाती है हम ऐसा ऊंच बनने लायक हैं। यह तो जानने हो कांटों के जंगल का बीज रावण है। फूलों के बगीचे का बीज है राम। यह सभी बातें बाप बैठ सुनाते हैं। भक्ति मार्ग में जो भी बातें सुनते हैं वह सभी गिरने की ही सुनाते हैं। बाबा फिर भी स्कूल की पढ़ाई ही सराह करते हैं। वह पढ़ाई फिर भी अच्छी है। क्योंकि उन मे सौंस आफ इनकम है। एमआबजेक्ट भीहै। यह भी पाठशाला है। इनकी एमआबजेक्ट है यह बनने की। और कहां भी यह एम आबजेक्ट होती नहीं। तुम्हारी एक ही एम है नर से नारायण बनने की। भक्ति मार्ग में सत्य नारायण की कथाबहुत2 सुनते हैं। हर मास मेंबाभन को मंगाते हैं। ब्राहमण लोग गीता सुनाते हैं। आजकल तो गीता सभी सुनाते हैं। सच्चा2 ब्राहमण तो कोई है नहीं। तुम हो सच्चे ब्राहमण। सच्चे बाप के बच्चे हो। तुम सच्ची2 कथा सुनाते हो। सत्य नारायण की कथा भी है। तीजरी की कथा भी है।

बाप समझाते हैं झूठे ब्राहमणों की कथा तो बहुत सुनी उन में सभी ग्लानी ही ग्लानी है। उन में भी मुख्य है गीता। भगवानुवाचः मैंतुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। वह लोगगीता तो सुनाते आये हैं फिर कौन राजा बना? ऐसा कोई है जो कहे मैंतुमको राजाओं का राजा बनाऊंगा। मैं खुद नहीं बनुंगा। ऐसा कब सुना? यह एक ही बाप है तो बच्चों को बैठ समझाते हैं। बच्चे जानते हैं यहां बागवान पास रिफ्रेशहोने आते हैं। माली भी बनते हैं। फूल भी बनते हैं। माली तो जरूर बनना है। किसम2 के माली हैं। सर्विस न करेंगे तो अच्छा फूल कैसे बनेंगे। हरेक अपने दिल से पूछे मैं किस प्रकार का फूलहूं। किस प्रकार का माली बना हूं। बच्चों को विचार सागर मथन करना पड़े। ब्राहमणियां जानती है। माली भी किसम2 के होते हैं। कोई अच्छे2 माली भी आ जाते हैं। जिनका बड़ा अच्छा2 बगीचा होता है। जैसा अच्छा माली तो बगीचा भी अच्छा बनाते हैं। अच्छे2 फूल ले आते हैं। जो देखकर ही दिल खुश हो जाती। कोई हल्के2 फूल ले आते हैं। बागवान समझ जाते हैं यह क्या2 पद पावेंगे। अभी तो टाईम पड़ा है। एक एक कांटों को फूल बनाना मेहनत लगता है। कोई तो फूल बनने चाहते ही नहीं। कांटा ही पसन्द करते हैं। आंखों की वृति बहुत गन्दी रहती है। यहां आते हैं तो भी उन से खुशबूएं नहीं आती। बागवान भी चाहते हैं मेरे आगे फूल बैठे तो अच्छा है। जिनको देख खुश होता हूं। देखता हूं इनकी वृति ऐसी है तो उस पर नजर भी नहीं डालते हैं। इसलिए एक एक को देखते हैं। यह मेरे फूल किस प्रकार के हैं। कितने खुशबूएं देते हैं। कितना कांटों को फूल बनाते हैं। बने हैं वा नहीं। हरेक खुद भी समझ सकते हैं। हम कहां तक फूल बने हैं। पुरुषार्थ करते हैं। घड़ी2कहते हैं बाबा हम आप को भूल जाते हैं। योग में ठहर नहीं सकते हैं। अरे याद न करेंगे तो फूल कैसे बनेंगे। याद करो, पाप कटे तब फूल बने। फूल बन कर फिर औरों को भी फूल बनावेंगे तब माली नाम रख सकते हैं। बाबा मालियों की मांगनी करते रहते हैं। है कोई माली। क्यों नहीं माली बन सकते हैं। बन्धन तो छोड़ना चाहिए ना। अन्दर में जुट आना चाहिए। सर्विस का उल्लास रहना चाहिए। अपने पर आजा करने लिए मेहनतचाहिए। जिन में बहुत प्यार है उनको छोड़ना होता है बाप के सर्विस के लिए। जब तक फूल बने नहीं और औरों को नहीं बनाया है तो ऊंच पद कैसे पावेंगे। 2। जन्मों के लिए ऊंच ते ऊंच पद है। महाराजा है राजाएं हैं, बड़े2 साहुकार भी हैं। फिर नम्बरवार कम साहुकार भी हैं। प्रजा भी हैं। अभी हम क्या बने। जो अभी पुरुषार्थ करेंगे वही कल्प-कल्पान्तर बनेंगे। अभी पूरा जोर देकर पुरुषार्थ करना पड़े। नर से नारायण बनना चाहिए। जो अच्छे पुरुषार्थी होंगे वह अमल करेंगे। रोज के आमदनी और घाटे को देखना होता है। 2मास वा मास की बात नहीं। रोज अपना घाटा और फायदा निकालना चाहिए। घाटा

डालना न चाहिए। नहीं तो थर्ड क्लास बन पड़ेंगे। स्कूल में भी नम्बरवार तो होते हैं ना। मीठे2 बच्चे जानते हैं हमारा बीज है वृक्षपति जिसके आनेसे हम पर वृहस्पत की दशा बैठती है। फिर रावण आता है तो राहू की दशा बैठता है। वह एकदम हाईएस्ट वह एकदम लोयेस्ट। एकदम शिवालय से वेश्यलाय बना देते हैं। अभी तुम बच्चों पर शिव बाबाकी वृहस्पत की दशा है। पहले नया वृक्ष होता है फिर आधा से पुराना शुरु होता है। वेश्यालय कांटों के जंगल कोकहाजाता। अभी यहां तुम आये हो फूल बनने। यहा माली भी हैं बागवान भी हैं। माली भीवृधिको पाते रहते हैं। बागवान पास ले आते हैं। बागवान बाप तो जाता नहीं है। तो जरूर यहां आना पड़े। हरेक मालीफूल ले आते हैं। कोई2 बड़े अच्छे फूल ले आते हैं। तरफते हैं बाबा पास जावें। कैसी2 युक्ति से बच्चियां आती है। बाबा कहते हैं बड़ा अच्छा फूल लाया है। भल माली सेकण्ड क्लास है। माली से भी फूल अच्छे हो जाते हैं। तरफते हैं। बस बाबा पास जावें। जो बाबा हमारा इतना ऊंच विश्व का मालिक बनाते हैं। घर में मार खाते हैं तो भी कहते हैं शिव बाबा हमारी रक्षा करो। उनको ही सच्ची द्रौपदी कहा जाता है। पास्ट जो हो गया है सो फिर रिपीट होना है। कल पुकारा था ना। आज बाबा आये हैं बचाने लिए। युक्ति बताते हैं ऐसे2 भूं करो। तुम हो ब्राहमणी। वह पति है कीड़ा। उन पर भूं करते रहो। बोलो भगवानुवाच है काम महाशत्रु है। उनको जीतने से तुम विश्व का मालिक बनेंगे। कोई न कोई समय अबलाओं के वाक्य लग जाते हैं। तो फिर ठंढे हो जाते हैं। कहते हैं अच्छा भल जाओ। ऐसा बनाने वाले बाप के पास। मेरे तकदीर में नहीं है। तुम तो जाओ। ऐसे बहुत द्रौपदियां पुकारती हैं। बाबा लिखते हैं भूं2 करो। कोई स्त्रीयां भी ऐसी होती है जिनको सुपनखा पुतना कहा जाता है। फिर पुरुष उनको भूं2 करते हैं। वह कीड़ा बन पड़ते हैं। विकार बिगर रह नहीं सकती है। दुसाशन निर्विकारी और द्रौपदियां विकारी पुतना बन पड़ती है। ऐसे भी होते हैं। बागवान पास सभी किसम के हैं ना। बात मत पूछो। कोई2 कन्यायें भी कांटा बन जाती है। दूसरे से दिल लगी तो फिर उन से खराब हो पड़ती है। बहुत केस आते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं अपनी जन्मपत्री बताओ। बाप को सुनावेंगे नहीं तोवह वृधि को पाती जावेंगी। झूठ चल न सके। तुम्हारी वृति खराब हो ती हो जावेंगी। बाप को सुनाने से कुछ गुम हो जावेगा। सच्च बताना चाहिए। नहीं तो बिल्कुल महारोगी बन जावेंगे। कोई कहते हैं पति मर गया है फिर भी दृष्टि दूसरी तरफ जाती है। चाचा मिला, मामा मिला, गुरु मिला, जो आया उनसे काला मुंह कर देते। वा चेष्टा रखते हैं। जिसको बाबा सेमी कहते हैं। बाबा कहते हैं विकारी जो बनते हैं उनका काला होता है। कृष्ण को भी श्याम सुन्दर कहते हैं ना। पतित माना मही काला मुंह। नम्बरवन का ही नाम लिया जाता है। नारायण को श्याम सुन्दर नहीं कहते। कृष्ण को कह देते हैं वही सुन्दर था। फिर काम चिक्षा पर बैठ श्याम काला बन गया। इसलिए कृष्ण को काला बना दिया है राम को भी काला नारायण को भी काला दिखाते हैं। तुम्हारे पास ना0 का चित्र गोरा है। तुम्हारी तो एमआबजेक्ट है। काला थोड़े ही देंगे। तुमको काला ना0 थोड़े ही बनना है। इसलिए यहसुन्दर बनाये हुये हैं। जैसे थे। विकार में गिरने से ही फिर काला मुंह हो जाता है। यह भी बाप बैठ समझाते हैं। काला मुंह करते2 अभी कितने काले बन पड़े हैं। अन्दर आत्मा ही काली बन पड़ी है। आयरनएजेड है ना। तुमको अभी गोल्डेन एज में जाना है। सोने की चिड़ियां बनना है। काली कलकते वाली कहते हैं ना। कितनी भयंकर सिकल उकनी दिखाई है। बात मत पूछो। कितने का शीश काटा है। कितनी भयानक दिखाते हैं। बाप कहते हैं सन्यासी आद भी हिरण्यकश्यप जैसे भयानक हैं। उनका चित्र तुम ने दिखाया है। जिसको अम्बरियां(आम)(जाकर लगाते हैं। पत्थर नहीं मारते हैं। अम्बरी लगाते हैं। मंदिर में पत्थर कैसे मारेंगे। मारना तो पत्थर चाहिए परन्तुआमदनी कैसे हो तो अम्बरियां जाकर लगाते हैं। अम्बरियों का ढेर हो जाता है। फिर इकट्ठे कर बेच देते हैं। रावण को भी जला देते हैं। रावण की सारी सेना है ना। पत्थर लगाने से डैमेज हो जावेंगे मूर्ति इसलिएअम्बरि लगाते हैं। फिर इकट्ठेकर कर बेच

देते हैं। श्री नाथ जगरनाथ के मंदिर में तुम ने शायद नहीं देखी है। दोनो में मूर्ति एक ही है। सिर्फ नाम भिन्न2 रख अलग2 अनेक मंदिर बना दिये हैं। श्रीनाथ के मंदिर में माल बहुत बनाते हैं। भारत बहुत शाहुकार था। घी की नदियां बहती थी। श्रीनाथ में भी घी की नीडियां बहती है। खुब माल बनता है। फिर दुकान पर रख बेचते हैं। बाबा सभी बातों का अनुभवी है। चक्र लगाये हैं इन सभी तीर्थों पर। तीर्थ भी बहुत किये हैं। गुरु भी बहुत किये हैं। बहुत हठयोग आद सिखलाते थे। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग में तीर्थ यात्रा आद करते मंदिर बनाते तुमने सभी पैसे ही खलास कर दी है। अभी बेगर बन भीख मांग रहे हो। स्वर्ग में तुम भारतवासी कितने धनवान थे। इन ल0ना0 का राज्य था ना। फिर वह कहां गये। 84 जन्म तो जरूर लेंगे ना। कृष्ण के लिए तुम बताते हो 84 जन्म लिये हैं तो बिगड़ पड़ते हैं। कृष्ण भगवानके लिए तुम कहते हो 84 जन्म। बाप कहते हैं यह नम्बरवन गोरा था। फिर 84 पुनर्जन्म लेते2 सांवरा बना है। तत त्वम्। तमोप्रधान से फिर सतो0 कौन बनावेंगे। बाप को ही आकर सतोप्रधान बनाना है। चित्र कितना सहज बना हुआ है। कोई को भी तुम समझा सकते हो। यहां है नर्क, वहां है स्वर्ग। अभी है संगम युग। जो तुम ब्राहमण राजयोग सीखते हो। फिर तुम ही राजाई में जाते हो। बाकी सभी शान्तिधाम चले जावेंगे। ऊपर में लिखा हुआ है। ब्रहमा द्वारा एक धर्म की स्थापना। शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश। यह सभी थे नहीं। फिर न होंगे। सतयुग में सिवाय देवी देवताओं के दूसरे कोई धर्म थे नहीं। यह भी कोई की बुधि में नहीं आता है। इसलिए बाबा ने यह नक्शे आदि बनाये हैं। चित्रों के सामने जाकर खड़ा करो। कितना क्लीयर है। तुम बच्चे जानते हो पहले2 आदी सनातन देवी देवता देवतायें ही थे। भारत का बहुत छोटा शोभनिक बनाना चाहिए स्वर्ग का चित्र। इस स्वर्ग में देवी देवतायें राज्य करते थे। भारत पलाने सम्बत से पलाने सम्बत। दूसरा कोई धर्म नहीं था। यह तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। पहले2 भारत यह (स्वर्ग) था। बाकी सभी धर्म पीछे आये हैं। यह भी तुम समझा सकते हो। और कोई जानते ही नहीं हैं। देवताओं में भी यह नालेज नहीं होंगी। स्टुडन्ट पढ़कर पास करते हैं-नालेज बुधि में बैठ जाती है। पढ़ाई से पद मिला गया पढ़ने की दरकार ही नहीं। पढ़ाई खत्म हो जाती है। तुमको भी अभी बाप पढ़ाते हैं। फिर तुम देवता पद पा लेते हो। वहां इस पढ़ाई की दरकार ही नहीं। बाप कहते हैं मैं ही यह पढ़ाई पढ़ाता हूं और पढ़ाऊंगा। भक्ति मार्ग में तुमने कितना बारी गीता पढ़ी होंगी। पहले तो जरूर अपना शरीर ही पढ़ती होगी। पहले2 तुम ने पूजा शुरू की ना। तो बच्चों को कितना मीठा गुल2 बनना चाहिए। मीठे2 ज्ञान की बातें सुनकर फिर औरों को सुनाना चाहिए। यह तो कल्प2 तुम करते हो। बाप समझाते रहते हैं। आंखें जो धोखा देती है उस पर ही गुस्सा करो। (सूर सूरदास का मिसाल है ना) अपन को थप्पर मारना चाहिए। यह क्या हमारी आंखों ने धोखा क्यों दिया। ऐसे2 विकर्म की बातें क्यों आई। बाबा भक्ति में जब बैठते थे तो पूजा करते2 ध्यान बाहर धंधे आद तरफ चला जाता था तो अपन को चुन्डरी पहनते थे। हमारी बुधि क्यों भागी। बाप भी कहते हैं क्रिमनल आई धोखा देते तो लगाओ थप्पर। तब सुधार होगा। इसलिए बाबा कहते है रोज अपना चार्ट रखो। श्रीमत पर अगर न चलेंगे तो फिर तुमको पछताना पड़ेगा। और यह युनिवर्सिटी खोलते जाओ। बाबा ऐसे नहीं कहते है कि यहां आकर पैसे रखो। नहीं। रूहानी युनिवर्सिटी खोलो। बाबा डायरेक्शन देते रहेंगे। सर्विस लायकबनना चाहिए। पैसे हैं तो म्युजियम खोलो। हिम्मते बच्चे मददे बाप। दिल साफ तो मुराद हासिल। एक को ही तुम याद करो तो विश्व के मालिक बन जावेंगे। इस समय पुरु0 पूरा करना है। अभी फेल हुये तो कब भी राजा-रानी वा महाराजा महारानी नहीं बन सकते। इसलिए अच्छी रीत पुरुषार्थ करो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रित बाप दादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों प्रित रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।